

Week 7 Day 35 ぶんぽう 文法 (grammar)

1.

1) くるま 車 (①) き 気 (②) つけて ください。

① a. に b. の c. が

② a. を b. で c. に

2) よこはま 横浜 (①) にほん 日本 (②) かんこく 韓国 (③) サッカー (④) しあい 試合が

ありました。

① a. へ b. に c. で

② a. と b. の c. に

③ a. に b. で c. の

④ a. と b. の c. が

2.

1) A : _____、てんき 天気が わる 悪いですね。

B : そうですね。あめ 雨の ひ 日が おほ 多いですね。

a. もちろん b. かなら 必ず c. さいきん 最近

2) A : あした 明日の しあい 試合、にほん 日本は か 勝つと おも 思いますか。

B : _____ か 勝ちますよ。たの 楽しみですね。

a. ぜひ b. もちろん c. あとで

3) A : にもつ 荷物は いつ とど 届きますか。

B : _____ きょう 今日 ごご の 午後 とど 届くと おも 思います。

a. たぶん b. さいきん 最近 c. あとで

4) A : にほんじん 日本人に ついて、 _____ おも 思いますか。

B : そうですね。 ちょっと つめ 冷たいと おも 思います。

a. なん b. どんな c. どう

3.

1) A: 山田さんは 帰りましたか。

B: はい、 (帰った) と 思います。

2) A: この 店、 おいしいですね。 Cさんは この 店を 知っていますか。

B: いいえ、 きっと (知らない) と 思います。

3) A: 今、 Cさんは 忙しいですか。

B: いいえ、 あまり (忙しくない) と 思います。

4) A: 今日、 歯医者は 休みですか。

B: はい、 (休みだ) と 思います。

5) A: 田中先生は 独身ですか。

B: いいえ、 (独身じゃない) と 思います。

4.

1) A: 日本は 物価が 高いですね。

B: わたしも そう _____。

Ⓐ. ①. ②. ③. ④. ⑤. ⑥. ⑦. ⑧. ⑨. ⑩. ⑪. ⑫. ⑬. ⑭. ⑮. ⑯. ⑰. ⑱. ⑲. ⑳. ㉑. ㉒. ㉓. ㉔. ㉕. ㉖. ㉗. ㉘. ㉙. ㉚. ㉛. ㉜. ㉝. ㉞. ㉟. ㊱. ㊲. ㊳. ㊴. ㊵. ㊶. ㊷. ㊸. ㊹. ㊺. ㊻. ㊼. ㊽. ㊾. ㊿. ㉠. ㉡. ㉢. ㉣. ㉤. ㉥. ㉦. ㉧. ㉨. ㉩. ㉪. ㉫. ㉬. ㉭. ㉮. ㉯. ㉰. ㉱. ㉲. ㉳. ㉴. ㉵. ㉶. ㉷. ㉸. ㉹. ㉺. ㉻. ㉼. ㉽. ㉾. ㉿. ㊰. ㊱. ㊲. ㊳. ㊴. ㊵. ㊶. ㊷. ㊸. ㊹. ㊺. ㊻. ㊼. ㊽. ㊾. ㊿. ㏀. ㏁. ㏂. ㏃. ㏄. ㏅. ㏆. ㏇. ㏈. ㏉. ㏊. ㏋. ㏌. ㏍. ㏎. ㏏. ㏐. ㏑. ㏒. ㏓. ㏔. ㏕. ㏖. ㏗. ㏘. ㏙. ㏚. ㏛. ㏜. ㏝. ㏞. ㏟. ㏠. ㏡. ㏢. ㏣. ㏤. ㏥. ㏦. ㏧. ㏨. ㏩. ㏪. ㏫. ㏬. ㏭. ㏮. ㏯. ㏰. ㏱. ㏲. ㏳. ㏴. ㏵. ㏶. ㏷. ㏸. ㏹. ㏺. ㏻. ㏼. ㏽. ㏾. ㏿. 㐀. 㐁. 㐂. 㐃. 㐄. 㐅. 㐆. 㐇. 㐈. 㐉. 㐊. 㐋. 㐌. 㐍. 㐎. 㐏. 㐐. 㐑. 㐒. 㐓. 㐔. 㐕. 㐖. 㐗. 㐘. 㐙. 㐚. 㐛. 㐜. 㐝. 㐞. 㐟. 㐠. 㐡. 㐢. 㐣. 㐤. 㐥. 㐦. 㐧. 㐨. 㐩. 㐪. 㐫. 㐬. 㐭. 㐮. 㐯. 㐰. 㐱. 㐲. 㐳. 㐴. 㐵. 㐶. 㐷. 㐸. 㐹. 㐺. 㐻. 㐼. 㐽. 㐾. 㐿. 㑀. 㑁. 㑂. 㑃. 㑄. 㑅. 㑆. 㑇. 㑈. 㑉. 㑊. 㑋. 㑌. 㑍. 㑎. 㑏. 㑐. 㑑. 㑒. 㑓. 㑔. 㑕. 㑖. 㑗. 㑘. 㑙. 㑚. 㑛. 㑜. 㑝. 㑞. 㑟. 㑠. 㑡. 㑢. 㑣. 㑤. 㑥. 㑦. 㑧. 㑨. 㑩. 㑪. 㑫. 㑬. 㑭. 㑮. 㑯. 㑰. 㑱. 㑲. 㑳. 㑴. 㑵. 㑶. 㑷. 㑸. 㑹. 㑺. 㑻. 㑼. 㑽. 㑾. 㑿. 㒀. 㒁. 㒂. 㒃. 㒄. 㒅. 㒆. 㒇. 㒈. 㒉. 㒊. 㒋. 㒌. 㒍. 㒎. 㒏. 㒐. 㒑. 㒒. 㒓. 㒔. 㒕. 㒖. 㒗. 㒘. 㒙. 㒚. 㒛. 㒜. 㒝. 㒞. 㒟. 㒠. 㒡. 㒢. 㒣. 㒤. 㒥. 㒦. 㒧. 㒨. 㒩. 㒪. 㒫. 㒬. 㒭. 㒮. 㒯. 㒰. 㒱. 㒲. 㒳. 㒴. 㒵. 㒶. 㒷. 㒸. 㒹. 㒺. 㒻. 㒼. 㒽. 㒾. 㒿. 㓀. 㓁. 㓂. 㓃. 㓄. 㓅. 㓆. 㓇. 㓈. 㓉. 㓊. 㓋. 㓌. 㓍. 㓎. 㓏. 㓐. 㓑. 㓒. 㓓. 㓔. 㓕. 㓖. 㓗. 㓘. 㓙. 㓚. 㓛. 㓜. 㓝. 㓞. 㓟. 㓠. 㓡. 㓢. 㓣. 㓤. 㓥. 㓦. 㓧. 㓨. 㓩. 㓪. 㓫. 㓬. 㓭. 㓮. 㓯. 㓰. 㓱. 㓲. 㓳. 㓴. 㓵. 㓶. 㓷. 㓸. 㓹. 㓺. 㓻. 㓼. 㓽. 㓾. 㓿. 㔀. 㔁. 㔂. 㔃. 㔄. 㔅. 㔆. 㔇. 㔈. 㔉. 㔊. 㔋. 㔌. 㔍. 㔎. 㔏. 㔐. 㔑. 㔒. 㔓. 㔔. 㔕. 㔖. 㔗. 㔘. 㔙. 㔚. 㔛. 㔜. 㔝. 㔞. 㔟. 㔠. 㔡. 㔢. 㔣. 㔤. 㔥. 㔦. 㔧. 㔨. 㔩. 㔪. 㔫. 㔬. 㔭. 㔮. 㔯. 㔰. 㔱. 㔲. 㔳. 㔴. 㔵. 㔶. 㔷. 㔸. 㔹. 㔺. 㔻. 㔼. 㔽. 㔾. 㔿. 㕀. 㕁. 㕂. 㕃. 㕄. 㕅. 㕆. 㕇. 㕈. 㕉. 㕊. 㕋. 㕌. 㕍. 㕎. 㕏. 㕐. 㕑. 㕒. 㕓. 㕔. 㕕. 㕖. 㕗. 㕘. 㕙. 㕚. 㕛. 㕜. 㕝. 㕞. 㕟. 㕠. 㕡. 㕢. 㕣. 㕤. 㕥. 㕦. 㕧. 㕨. 㕩. 㕪. 㕫. 㕬. 㕭. 㕮. 㕯. 㕰. 㕱. 㕲. 㕳. 㕴. 㕵. 㕶. 㕷. 㕸. 㕹. 㕺. 㕻. 㕼. 㕽. 㕾. 㕿. 㖀. 㖁. 㖂. 㖃. 㖄. 㖅. 㖆. 㖇. 㖈. 㖉. 㖊. 㖋. 㖌. 㖍. 㖎. 㖏. 㖐. 㖑. 㖒. 㖓. 㖔. 㖕. 㖖. 㖗. 㖘. 㖙. 㖚. 㖛. 㖜. 㖝. 㖞. 㖟. 㖠. 㖡. 㖢. 㖣. 㖤. 㖥. 㖦. 㖧. 㖨. 㖩. 㖪. 㖫. 㖬. 㖭. 㖮. 㖯. 㖰. 㖱. 㖲. 㖳. 㖴. 㖵. 㖶. 㖷. 㖸. 㖹. 㖺. 㖻. 㖼. 㖽. 㖾. 㖿. 㗀. 㗁. 㗂. 㗃. 㗄. 㗅. 㗆. 㗇. 㗈. 㗉. 㗊. 㗋. 㗌. 㗍. 㗎. 㗏. 㗐. 㗑. 㗒. 㗓. 㗔. 㗕. 㗖. 㗗. 㗘. 㗙. 㗚. 㗛. 㗜. 㗝. 㗞. 㗟. 㗠. 㗡. 㗢. 㗣. 㗤. 㗥. 㗦. 㗧. 㗨. 㗩. 㗪. 㗫. 㗬. 㗭. 㗮. 㗯. 㗰. 㗱. 㗲. 㗳. 㗴. 㗵. 㗶. 㗷. 㗸. 㗹. 㗺. 㗻. 㗼. 㗽. 㗾. 㗿. 㘀. 㘁. 㘂. 㘃. 㘄. 㘅. 㘆. 㘇. 㘈. 㘉. 㘊. 㘋. 㘌. 㘍. 㘎. 㘏. 㘐. 㘑. 㘒. 㘓. 㘔. 㘕. 㘖. 㘗. 㘘. 㘙. 㘚. 㘛. 㘜. 㘝. 㘞. 㘟. 㘠. 㘡. 㘢. 㘣. 㘤. 㘥. 㘦. 㘧. 㘨. 㘩. 㘪. 㘫. 㘬. 㘭. 㘮. 㘯. 㘰. 㘱. 㘲. 㘳. 㘴. 㘵. 㘶. 㘷. 㘸. 㘹. 㘺. 㘻. 㘼. 㘽. 㘾. 㘿. 㙀. 㙁. 㙂. 㙃. 㙄. 㙅. 㙆. 㙇. 㙈. 㙉. 㙊. 㙋. 㙌. 㙍. 㙎. 㙏. 㙐. 㙑. 㙒. 㙓. 㙔. 㙕. 㙖. 㙗. 㙘. 㙙. 㙚. 㙛. 㙜. 㙝. 㙞. 㙟. 㙠. 㙡. 㙢. 㙣. 㙤. 㙥. 㙦. 㙧. 㙨. 㙩. 㙪. 㙫. 㙬. 㙭. 㙮. 㙯. 㙰. 㙱. 㙲. 㙳. 㙴. 㙵. 㙶. 㙷. 㙸. 㙹. 㙺. 㙻. 㙼. 㙽. 㙾. 㙿. 㚀. 㚁. 㚂. 㚃. 㚄. 㚅. 㚆. 㚇. 㚈. 㚉. 㚊. 㚋. 㚌. 㚍. 㚎. 㚏. 㚐. 㚑. 㚒. 㚓. 㚔. 㚕. 㚖. 㚗. 㚘. 㚙. 㚚. 㚛. 㚜. 㚝. 㚞. 㚟. 㚠. 㚡. 㚢. 㚣. 㚤. 㚥. 㚦. 㚧. 㚨. 㚩. 㚪. 㚫. 㚬. 㚭. 㚮. 㚯. 㚰. 㚱. 㚲. 㚳. 㚴. 㚵. 㚶. 㚷. 㚸. 㚹. 㚺. 㚻. 㚼. 㚽. 㚾. 㚿. 㜀. 㜁. 㜂. 㜃. 㜄. 㜅. 㜆. 㜇. 㜈. 㜉. 㜊. 㜋. 㜌. 㜍. 㜎. 㜏. 㜐. 㜑. 㜒. 㜓. 㜔. 㜕. 㜖. 㜗. 㜘. 㜙. 㜚. 㜛. 㜜. 㜝. 㜞. 㜟. 㜠. 㜡. 㜢. 㜣. 㜤. 㜥. 㜦. 㜧. 㜨. 㜩. 㜪. 㜫. 㜬. 㜭. 㜮. 㜯. 㜰. 㜱. 㜲. 㜳. 㜴. 㜵. 㜶. 㜷. 㜸. 㜹. 㜺. 㜻. 㜼. 㜽. 㜾. 㜿. 㝀. 㝁. 㝂. 㝃. 㝄. 㝅. 㝆. 㝇. 㝈. 㝉. 㝊. 㝋. 㝌. 㝍. 㝎. 㝏. 㝐. 㝑. 㝒. 㝓. 㝔. 㝕. 㝖. 㝗. 㝘. 㝙. 㝚. 㝛. 㝜. 㝝. 㝞. 㝟. 㝠. 㝡. 㝢. 㝣. 㝤. 㝥. 㝦. 㝧. 㝨. 㝩. 㝪. 㝫. 㝬. 㝭. 㝮. 㝯. 㝰. 㝱. 㝲. 㝳. 㝴. 㝵. 㝶. 㝷. 㝸. 㝹. 㝺. 㝻. 㝼. 㝽. 㝾. 㝿. 㞀. 㞁. 㞂. 㞃. 㞄. 㞅. 㞆. 㞇. 㞈. 㞉. 㞊. 㞋. 㞌. 㞍. 㞎. 㞏. 㞐. 㞑. 㞒. 㞓. 㞔. 㞕. 㞖. 㞗. 㞘. 㞙. 㞚. 㞛. 㞜. 㞝. 㞞. 㞟. 㞠. 㞡. 㞢. 㞣. 㞤. 㞥. 㞦. 㞧. 㞨. 㞩. 㞪. 㞫. 㞬. 㞭. 㞮. 㞯. 㞰. 㞱. 㞲. 㞳. 㞴. 㞵. 㞶. 㞷. 㞸. 㞹. 㞺. 㞻. 㞼. 㞽. 㞾. 㞿. 㟀. 㟁. 㟂. 㟃. 㟄. 㟅. 㟆. 㟇. 㟈. 㟉. 㟊. 㟋. 㟌. 㟍. 㟎. 㟏. 㟐. 㟑. 㟒. 㟓. 㟔. 㟕. 㟖. 㟗. 㟘. 㟙. 㟚. 㟛. 㟜. 㟝. 㟞. 㟟. 㟠. 㟡. 㟢. 㟣. 㟤. 㟥. 㟦. 㟧. 㟨. 㟩. 㟪. 㟫. 㟬. 㟭. 㟮. 㟯. 㟰. 㟱. 㟲. 㟳. 㟴. 㟵. 㟶. 㟷. 㟸. 㟹. 㟺. 㟻. 㟼. 㟽. 㟾. 㟿. 㠀. 㠁. 㠂. 㠃. 㠄. 㠅. 㠆. 㠇. 㠈. 㠉. 㠊. 㠋. 㠌. 㠍. 㠎. 㠏. 㠐. 㠑. 㠒. 㠓. 㠔. 㠕. 㠖. 㠗. 㠘. 㠙. 㠚. 㠛. 㠜. 㠝. 㠞. 㠟. 㠠. 㠡. 㠢. 㠣. 㠤. 㠥. 㠦. 㠧. 㠨. 㠩. 㠪. 㠫. 㠬. 㠭. 㠮. 㠯. 㠰. 㠱. 㠲. 㠳. 㠴. 㠵. 㠶. 㠷. 㠸. 㠹. 㠺. 㠻. 㠼. 㠽. 㠾. 㠿. 㡀. 㡁. 㡂. 㡃. 㡄. 㡅. 㡆. 㡇. 㡈. 㡉. 㡊. 㡋. 㡌. 㡍. 㡎. 㡏. 㡐. 㡑. 㡒. 㡓. 㡔. 㡕. 㡖. 㡗. 㡘. 㡙. 㡚. 㡛. 㡜. 㡝. 㡞. 㡟. 㡠. 㡡. 㡢. 㡣. 㡤. 㡥. 㡦. 㡧. 㡨. 㡩. 㡪. 㡫. 㡬. 㡭. 㡮. 㡯. 㡰. 㡱. 㡲. 㡳. 㡴. 㡵. 㡶. 㡷. 㡸. 㡹. 㡺. 㡻. 㡼. 㡽. 㡾. 㡿. 㢀. 㢁. 㢂. 㢃. 㢄. 㢅. 㢆. 㢇. 㢈. 㢉. 㢊. 㢋. 㢌. 㢍. 㢎. 㢏. 㢐. 㢑. 㢒. 㢓. 㢔. 㢕. 㢖. 㢗. 㢘. 㢙. 㢚. 㢛. 㢜. 㢝. 㢞. 㢟. 㢠. 㢡. 㢢. 㢣. 㢤. 㢥. 㢦. 㢧. 㢨. 㢩. 㢪. 㢫. 㢬. 㢭. 㢮. 㢯. 㢰. 㢱. 㢲. 㢳. 㢴. 㢵. 㢶. 㢷. 㢸. 㢹. 㢺. 㢻. 㢼. 㢽. 㢾. 㢿. 㣀. 㣁. 㣂. 㣃. 㣄. 㣅. 㣆. 㣇. 㣈. 㣉. 㣊. 㣋. 㣌. 㣍. 㣎. 㣏. 㣐. 㣑. 㣒. 㣓. 㣔. 㣕. 㣖. 㣗. 㣘. 㣙. 㣚. 㣛. 㣜. 㣝. 㣞. 㣟. 㣠. 㣡. 㣢. 㣣. 㣤. 㣥. 㣦. 㣧. 㣨. 㣩. 㣪. 㣫. 㣬. 㣭. 㣮. 㣯. 㣰. 㣱. 㣲. 㣳. 㣴. 㣵. 㣶. 㣷. 㣸. 㣹. 㣺. 㣻. 㣼. 㣽. 㣾. 㣿. 㤀. 㤁. 㤂. 㤃. 㤄. 㤅. 㤆. 㤇. 㤈. 㤉. 㤊. 㤋. 㤌. 㤍. 㤎. 㤏. 㤐. 㤑. 㤒. 㤓. 㤔. 㤕. 㤖. 㤗. 㤘. 㤙. 㤚. 㤛. 㤜. 㤝. 㤞. 㤟. 㤠. 㤡. 㤢. 㤣. 㤤. 㤥. 㤦. 㤧. 㤨. 㤩. 㤪. 㤫. 㤬. 㤭. 㤮. 㤯. 㤰. 㤱. 㤲. 㤳. 㤴. 㤵. 㤶. 㤷. 㤸. 㤹. 㤺. 㤻. 㤼. 㤽. 㤾. 㤿. 㥀. 㥁. 㥂. 㥃. 㥄. 㥅. 㥆. 㥇. 㥈. 㥉. 㥊. 㥋. 㥌. 㥍. 㥎. 㥏. 㥐. 㥑. 㥒. 㥓. 㥔. 㥕. 㥖. 㥗. 㥘. 㥙. 㥚. 㥛. 㥜. 㥝. 㥞. 㥟. 㥠. 㥡. 㥢. 㥣. 㥤. 㥥. 㥦. 㥧. 㥨. 㥩. 㥪. 㥫. 㥬. 㥭. 㥮. 㥯. 㥰. 㥱. 㥲. 㥳. 㥴. 㥵. 㥶. 㥷. 㥸. 㥹. 㥺. 㥻. 㥼. 㥽. 㥾. 㥿. 㦀. 㦁. 㦂. 㦃. 㦄. 㦅. 㦆. 㦇. 㦈. 㦉. 㦊. 㦋. 㦌. 㦍. 㦎. 㦏. 㦐. 㦑. 㦒. 㦓. 㦔. 㦕. 㦖. 㦗. 㦘. 㦙. 㦚. 㦛. 㦜. 㦝. 㦞. 㦟. 㦠. 㦡. 㦢. 㦣. 㦤. 㦥. 㦦. 㦧. 㦨. 㦩. 㦪. 㦫. 㦬. 㦭. 㦮. 㦯. 㦰. 㦱. 㦲. 㦳. 㦴. 㦵. 㦶. 㦷. 㦸. 㦹. 㦺. 㦻. 㦼. 㦽. 㦾. 㦿. 㧀. 㧁. 㧂. 㧃. 㧄. 㧅. 㧆. 㧇. 㧈. 㧉. 㧊. 㧋. 㧌. 㧍. 㧎. 㧏. 㧐. 㧑. 㧒. 㧓. 㧔. 㧕. 㧖. 㧗. 㧘. 㧙. 㧚. 㧛. 㧜. 㧝. 㧞. 㧟. 㧠. 㧡. 㧢. 㧣. 㧤. 㧥. 㧦. 㧧. 㧨. 㧩. 㧪. 㧫. 㧬. 㧭. 㧮. 㧯. 㧰. 㧱. 㧲. 㧳. 㧴. 㧵. 㧶. 㧷. 㧸. 㧹. 㧺. 㧻. 㧼. 㧽. 㧾. 㧿. 㨀. 㨁. 㨂. 㨃. 㨄. 㨅. 㨆. 㨇. 㨈. 㨉. 㨊. 㨋. 㨌. 㨍. 㨎. 㨏. 㨐. 㨑. 㨒. 㨓. 㨔. 㨕. 㨖. 㨗. 㨘. 㨙. 㨚. 㨛. 㨜. 㨝. 㨞. 㨟. 㨠. 㨡. 㨢. 㨣. 㨤. 㨥. 㨦. 㨧. 㨨. 㨩. 㨪. 㨫. 㨬. 㨭. 㨮. 㨯. 㨰. 㨱. 㨲. 㨳. 㨴. 㨵. 㨶. 㨷. 㨸. 㨹. 㨺. 㨻. 㨼. 㨽. 㨾. 㨿. 㩀. 㩁. 㩂. 㩃. 㩄. 㩅. 㩆. 㩇. 㩈. 㩉. 㩊. 㩋. 㩌. 㩍. 㩎. 㩏. 㩐. 㩑. 㩒. 㩓. 㩔. 㩕. 㩖. 㩗. 㩘. 㩙. 㩚. 㩛. 㩜. 㩝. 㩞. 㩟. 㩠. 㩡. 㩢. 㩣. 㩤. 㩥. 㩦. 㩧. 㩨. 㩩. 㩪. 㩫. 㩬. 㩭. 㩮. 㩯. 㩰. 㩱. 㩲. 㩳. 㩴. 㩵. 㩶. 㩷. 㩸. 㩹. 㩺. 㩻. 㩼. 㩽. 㩾. 㩿. 㪀. 㪁. 㪂. 㪃. 㪄. 㪅. 㪆. 㪇. 㪈. 㪉. 㪊. 㪋. 㪌. 㪍. 㪎. 㪏. 㪐. 㪑. 㪒. 㪓. 㪔. 㪕. 㪖. 㪗. 㪘. 㪙. 㪚. 㪛. 㪜. 㪝. 㪞. 㪟. 㪠. 㪡. 㪢. 㪣. 㪤. 㪥. 㪦. 㪧. 㪨. 㪩. 㪪. 㪫. 㪬. 㪭. 㪮. 㪯. 㪰. 㪱. 㪲. 㪳. 㪴. 㪵. 㪶. 㪷. 㪸. 㪹. 㪺. 㪻. 㪼. 㪽. 㪾. 㪿. 㫀. 㫁. 㫂. 㫃. 㫄. 㫅. 㫆. 㫇. 㫈. 㫉. 㫊. 㫋. 㫌. 㫍. 㫎. 㫏. 㫐. 㫑. 㫒. 㫓. 㫔. 㫕. 㫖. 㫗. 㫘. 㫙. 㫚. 㫛. 㫜. 㫝. 㫞. 㫟. 㫠. 㫡. 㫢. 㫣. 㫤. 㫥. 㫦. 㫧. 㫨. 㫩. 㫪. 㫫. 㫬. 㫭. 㫮. 㫯. 㫰. 㫱. 㫲. 㫳. 㫴. 㫵. 㫶. 㫷. 㫸. 㫹. 㫺. 㫻. 㫼. 㫽. 㫾. 㫿. 㬀. 㬁. 㬂. 㬃. 㬄. 㬅. 㬆. 㬇. 㬈. 㬉. 㬊. 㬋. 㬌. 㬍. 㬎. 㬏. 㬐. 㬑. 㬒. 㬓. 㬔. 㬕. 㬖. 㬗. 㬘. 㬙. 㬚. 㬛. 㬜. 㬝. 㬞. 㬟. 㬠. 㬡. 㬢. 㬣. 㬤. 㬥. 㬦. 㬧. 㬨. 㬩. 㬪. 㬫. 㬬. 㬭. 㬮. 㬯. 㬰. 㬱. 㬲. 㬳. 㬴. 㬵. 㬶. 㬷. 㬸. 㬹. 㬺. 㬻. 㬼. 㬽. 㬾. 㬿. 㭀. 㭁. 㭂. 㭃. 㭄. 㭅. 㭆. 㭇. 㭈. 㭉. 㭊. 㭋. 㭌. 㭍. 㭎. 㭏. 㭐. 㭑. 㭒. 㭓. 㭔. 㭕. 㭖. 㭗. 㭘. 㭙. 㭚. 㭛. 㭜. 㭝. 㭞. 㭟. 㭠. 㭡. 㭢. 㭣. 㭤. 㭥. 㭦. 㭧. 㭨. 㭩. 㭪. 㭫. 㭬. 㭭. 㭮. 㭯. 㭰. 㭱. 㭲. 㭳. 㭴. 㭵. 㭶. 㭷. 㭸. 㭹. 㭺. 㭻. 㭼. 㭽. 㭾. 㭿. 㮀. 㮁. 㮂. 㮃. 㮄. 㮅. 㮆. 㮇. 㮈. 㮉. 㮊. 㮋. 㮌. 㮍. 㮎. 㮏. 㮐. 㮑. 㮒. 㮓. 㮔. 㮕. 㮖. 㮗. 㮘. 㮙. 㮚. 㮛. 㮜. 㮝. 㮞. 㮟. 㮠. 㮡. 㮢. 㮣. 㮤. 㮥. 㮦. 㮧. 㮨. 㮩. 㮪. 㮫. 㮬. 㮭. 㮮. 㮯. 㮰. 㮱. 㮲. 㮳. 㮴. 㮵. 㮶. 㮷. 㮸. 㮹. 㮺. 㮻. 㮼. 㮽. 㮾. 㮿. 㯀. 㯁. 㯂. 㯃. 㯄. 㯅. 㯆. 㯇. 㯈. 㯉. 㯊. 㯋. 㯌. 㯍. 㯎. 㯏. 㯐. 㯑. 㯒. 㯓. 㯔. 㯕. 㯖. 㯗. 㯘. 㯙. 㯚. 㯛. 㯜. 㯝. 㯞. 㯟. 㯠. 㯡. 㯢. 㯣. 㯤. 㯥. 㯦. 㯧. 㯨. 㯩. 㯪. 㯫. 㯬. 㯭. 㯮. 㯯. 㯰. 㯱. 㯲. 㯳. 㯴. 㯵. 㯶. 㯷. 㯸. 㯹. 㯺. 㯻. 㯼. 㯽. 㯾. 㯿. 㰀. 㰁. 㰂. 㰃. 㰄. 㰅. 㰆. 㰇. 㰈. 㰉. 㰊. 㰋. 㰌. 㰍. 㰎. 㰏. 㰐. 㰑. 㰒. 㰓. 㰔. 㰕. 㰖. 㰗. 㰘. 㰙. 㰚. 㰛. 㰜. 㰝. 㰞. 㰟. 㰠. 㰡. 㰢. 㰣. 㰤. 㰥. 㰦. 㰧. 㰨. 㰩. 㰪. 㰫. 㰬. 㰭. 㰮. 㰯. 㰰. 㰱. 㰲. 㰳. 㰴. 㰵. 㰶. 㰷. 㰸. 㰹. 㰺. 㰻. 㰼. 㰽. 㰾. 㰿. 㱀. 㱁. 㱂. 㱃. 㱄. 㱅. 㱆. 㱇. 㱈. 㱉. 㱊. 㱋. 㱌. 㱍. 㱎. 㱏. 㱐. 㱑. 㱒. 㱓. 㱔. 㱕. 㱖. 㱗. 㱘. 㱙. 㱚. 㱛. 㱜. 㱝. 㱞. 㱟. 㱠. 㱡. 㱢. 㱣. 㱤. 㱥. 㱦. 㱧. 㱨. 㱩. 㱪. 㱫. 㱬. 㱭. 㱮. 㱯. 㱰. 㱱. 㱲. 㱳. 㱴. 㱵. 㱶. 㱷. 㱸. 㱹. 㱺. 㱻. 㱼. 㱽. 㱾. 㱿. 㲀. 㲁. 㲂. 㲃. 㲄. 㲅. 㲆. 㲇. 㲈. 㲉. 㲊. 㲋. 㲌. 㲍. 㲎. 㲏. 㲐. 㲑. 㲒. 㲓. 㲔. 㲕. 㲖. 㲗. 㲘. 㲙. 㲚. 㲛. 㲜. 㲝. 㲞. 㲟. 㲠. 㲡. 㲢. 㲣. 㲤. 㲥. 㲦. 㲧. 㲨. 㲩. 㲪. 㲫. 㲬. 㲭. 㲮. 㲯. 㲰. 㲱. 㲲. 㲳. 㲴. 㲵. 㲶. 㲷. 㲸. 㲹. 㲺. 㲻. 㲼. 㲽. 㲾. 㲿. 㳀. 㳁. 㳂. 㳃. 㳄. 㳅. 㳆. 㳇. 㳈. 㳉. 㳊. 㳋. 㳌. 㳍.